# षष्ठ अध्याय

# उपसंहार

## षष्ठ अध्याय

# उपसंहार

अमरकांत का जन्म उत्तर प्रदेश के सबसे पूर्वी जिले बलिया के भगमलपुर गाँव में साधारण कायस्थ परिवार में हुआ था। अमरकांत का नाम श्रीराम रखा गया। इनके खानदान में लोग अपने नाम के साथ 'लाल' लगाते थे। अतरू अमरकांत का भी नाम 'श्रीराम लाल' हो गया। बचपन में ही किसी साधु–महात्मा द्वारा अमरकांत का एक और नाम रखा गया था। वह नाम था – 'अमरनाथ'। यह नाम अधिक प्रचलित तो ना हो सका, किंतु स्वयं श्रीराम लाल को इस नाम के प्रति आसक्ति हो गयी। इसलिए उन्होंने कुछ परिवर्तन करके अपना नाम 'अमरकांत' रख लिया। अपने नामकरण की चर्चा करते हुए स्वयं लिखते हैं, ''मेरे खानदान के लोग अपने नाम के साथ 'लाल' लगाते थे। मेरा नाम भी श्रीराम लाल ही था। लेकिन जब हम लोग बलिया शहर में रहने लगे तो चार–पाँच वर्ष बाद वहाँ अनेक कायस्थ परिवारों में 'लाल' के स्थान पर 'वर्मा' जोड़ दिया गया और मेरा नाम भी श्रीराम वर्मा हो गया। ऐसा क्यों किया गया, इसे उद्घाटित करने के लिए भारत के बहुत से जातिवादी कचरे को उलटना–पुलटना पड़ेगा। बस इतना ही कहना पर्याप्त है कि जब मैंने लेखन का निश्चय कर लिया तो 'लाल' या 'वर्मा' अथवा किसी जाति सूचक 'सरनेम' से मुक्ति पाने के लिए अपना नाम 'अमरकांत' रख लिया। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि मेरे दो नाम रखे गए थे, जिनमें एक 'अमरनाथ' भी था, जिसे एक साधु ने दिया था। यह नाम प्रचलित तो नहीं था, लेकिन मैंने इसमें हल्का संशोधन करके साहित्यिक नाम के रूप में इसे मान्यता दिला दी।

उनकी साहित्यिक कृतियाँ 'अमरकांत' नाम से ही प्रसिद्ध हुईं। अमरकांत की

प्रारंभिक शिक्षा 'नगरा' के प्राइमरी स्कूल से आरंभ हुई। अमरकांत के बचपन का समय वह समय था जब सारा देश आजादी के लिए तड़प रहा था। क्रांतिकारियों के किस्से हर गली हर मुहल्ले में गीतों के रूप में गाये जाते थे। अध्ययन के लिए सामग्री चोरी–छुपे उपलब्ध होती थी। मन्मथनाथ गुप्त की पुस्तक भारत में सशस्त्र क्रांति की चेष्टा, चाँद का फाँसी अंक और ऐसी कई पुस्तकों ने अमरकांत की जीवन दिशा बदली। अमरकांत ने बलिया के सतीशचन्द्र इन्टर कॉलेज से इन्टरमीडियेट की पढ़ाई पूरी कर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए.किए। उन्होंने बी.ए. पास करने के बाद पत्रकार बनने का निश्चय कर लिया और दैनिक सामाचार 'सैनिक' में अमरकांत को नौकरी मिल गयी।

किसी के भी व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार, परिवेश और शिक्षा आदि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अमरकांत के व्यक्तित्व के बारे में राजेन्द्र यादव लिखते हैं– ''अमरकांत टुच्चे, दुष्ट और कमीने लोगों के मनोविज्ञान का मास्टर है। उनकी तर्क पद्धति, मानसिकता और व्यवहार को जितनी गहराई से अमरकांत जानता है, मेरे खयाल से हिन्दी का कोई दूसरा लेखक नहीं जानता...।''[222] कथाकार अमरकांत का पारिवारिक वातावरण साहित्यिक नहीं था। फिर भी साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बहुत सारी बातें विरासत में अमरकांत को परिवार से ही मिली। 'जरि गइले एड़ी कपार' नामक लेख में शेखर जोशी ने इसी बात की चर्चा करते हुए लिखा है, ''किस्सागोई और व्यंग्य का ऐसा अनोखा वातावरण अमरकांत को अपने परिवार से विरासत में मिला

[222] अमरकांत वर्ष 1, आत्मकथा, अमरकांत

है।''[223]

अमरकांत को अपनी कई कहानियों की प्रेरणा परिवार के सदस्यों के द्वारा ही प्राप्त हुई है। अमरकांत का साहित्य और रचना संसार का फलक काफी विस्तृत और व्यापक है। अमरकांत के कहानी संग्रहों में जिंदगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र मिलन, कुहासा, तूफान, कला प्रेमी, सम्पूर्ण कहानियाँ, जाँच और बच्चे आदि प्रतिनिधि कहानियाँ हैं। अमरकांत के प्रकाशित उपन्यासों में सूखा पत्ता, आकाश पक्षी, काले उजले दिन, कँटीली राह के फूल, ग्राम सेविका, सुखजीवी, बीच की दीवार, सुन्नर पांडे की पतोह, लहरें, इन्ही हथियारों से आदि हैं। इनके अतिरिक्त 'प्रकीर्ण साहित्य' के अंतर्गत कुछ यादें कुछ बातें, नेउर भाई, बानर सेना, खूँटा में दाल है, सुग्गी चाची का गाँव, झगरूलाल का फैसला, एक स्त्री का सफर आदि रचनाएँ हैं।

प्रारंभ में अमरकांत का जुड़ाव रोमांटिक कहानियों से हुआ। वह समय भी 'रोमांटिक बोध' का था। इन दिनों अमरकांत शरतचन्द्र से बहुत प्रभावित रहे। ध्यान देने वाली बात यह भी है कि अमरकांत बलिया जैसे छोटे कस्बे में रहते थे। अमरकांत को शरतचन्द्र के लेखन ने भी प्रभावित किया। इसके कारण को स्पष्ट करते हुए अमरकांत स्वयं लिखते हैं–''एक मध्यमवर्गीय परिवार में जिस लाड़–प्यार से वह पला था, जैसे बँधे, पिछड़े और ग्रामीण समाज में वह रहता था, जैसी कच्ची उम्र और उसका देश जिस कष्ट, पीड़ा, अन्याय और गुलामी के दौर से गुजर रहा था और जैसा वह स्वयं अव्यावहारिक एवं कल्पनाशील था– ऐसी स्थितियों में 'रोमान्टिसिज्म' एक अनिवार्य परिणाम था। ... शरतचन्द्र का रोमांटिसिज्म व्यक्तिवाद, कोरी काल्पनिकता, कलाबाजी

---

[223] कुछ यादें कुछ बातें : अमरकांत (अमरकांत वर्ष–1), पृष्ठ क्रमांक 38

और छद्म आधुनिकता पर आधारित नहीं है। उनकी रचनाएँ अपने समय के प्रगतिशील यथार्थ की गहरी समझ के बल पर खड़ी होती है और परिवर्तन की कामना को तीव्रता से व्यक्त करती है।''[224] घर में 'चलता पुस्तकालय' के माध्यम से जो पुस्तकें उन्हें उपलब्ध होती वही वे पढ़ते थे। विद्यालय की किताबों में प्रेमचंद की कुछ एक कहानियाँ उन्होंने पढ़ी थी। पर विश्व साहित्य से उनका कोई संपर्क नहीं हो पाया था। प्रेमचंद के साहित्य को पढ़कर अमरकांत समाज के एक नए स्वरूप से परिचित हुए। समाज में व्याप्त अंधविश्वास, शोषण, कुरीतियाँ आदि को देखने की उनकी एक नई दृष्टि विकसित हुई।

अमरकांत का रचनात्मक जीवन अपनी पूरी गंभीरता के साथ प्रारंभ हुआ। जिन साहित्यकारों को अब तक वे पढ़ते थे या अपने कल्पना लोक में देखते थे उन्हीं के बीच स्वयं को पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए। साहित्यिक रचनाओं की सफलता अमरकांत के अनुसार रचना विशेष में निहित संवेदनात्मक ज्ञान पर आधारित होती हैं। इस संदर्भ में वे स्वयं कहते हैं– ''जो रचनाएँ द्वंद्व शून्य होती हैं, जिनमें संवेदनात्मक ज्ञान का अभाव होता है, जो फैशन का अन्धानुकरण करके शिल्प की कृत्रिम बुनावट करती हैं, जो वस्तुनिष्ठ नहीं होती और जिनमें मात्र आत्मगत सत्यों का प्रक्षेपण होता है – ऐसी समस्त रचनाएँ कई कारणों से अपने समय में प्रसिद्ध होने के बावजूद कालान्तर में प्रभावहीन एवम् निरर्थक हो जाती हैं।''[225] साहित्य सृजन के पीछे अमरकांत जो

---

[224] आत्मकथ्य : अमरकांत, अमरकांत वर्ष एक, संपादक – रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया एवम् नरेश सक्सेना, पृष्ठ क्रमांक 24 और 25

[225] अमरकांत से डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र की बातचीतरू साक्षात्कार, अमरकांत वर्ष एक, संपादक – रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया एवम् नरेश सक्सेना, पृष्ठ क्रमांक 108

आधारभूत तत्त्व मानते हैं, वे हैं– गहरी संवेदना, सामाजिक यथार्थ की समझदारी और ऐतिहासिक एवं प्रगतिशील जीवन दृष्टि। स्वयं अमरकांत कहते हैं कि ''... लेकिन वास्तव में जिसे साहित्य कहते हैं, उसका सृजन किसी राजनैतिक फार्मूले, विधि निषेधों अथवा कर्मकाण्डों के आधार पर नहीं होता, बल्कि उसके पीछे गहरी संवेदना, सामाजिक यथार्थ की समझदारी और ऐतिहासिक एवं प्रगतिशील जीवन दृष्टि होती है। साहित्यिक कृतियों पर सेन्सर लगाने का मैं समर्थक नहीं हूँ, क्योंकि उससे देश का सांस्कृतिक विकास कुंठित एवं अवरूद्ध हो सकता है।''[226] अमरकांत साहित्य को 'स्वतंत्र व्यक्ति की स्वतंत्र व्यक्ति से बातचीत' वाली विचारधारा का समर्थन नहीं करते। उनके अनुसार ''प्रश्न यह है कि जब समाज में गरीबी, शोषण, गुलामी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, झूठ आदि हावी हों, वैसी स्थिति में स्वतंत्र व्यक्ति कौन होगा? आखिर साहित्य में इस प्रकार का नारा क्यों दिया जाता है?''[227] अमरकांत मानते हैं कि साहित्य का उद्देश्य व्यापक होता है। समाज की यथार्थ और वास्तविक स्थितियों से विमुख होकर साहित्य कभी भी अपने व्यापक उद्देश्य में सफल नहीं हो पायेगा। जो साहित्यकार या बुद्धिजिवी इस बात को नहीं मानते उन्हें 'स्वतंत्र व्यक्ति' की नई परिभाषा को बताना पड़ेगा। साथ ही साथ इस तरह की स्वतंत्रता का सामाजिक यथार्थ बोध से संबंध स्थापित करते हुए यह भी सिद्ध करना पड़ेगा कि वह किस तरह साहित्य के व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकेगा।

---

[226] अमरकांत से डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र की बातचीत : साक्षात्कार, अमरकांत वर्ष एक, संपादक – रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया एवम् नरेश सक्सेना, पृष्ठ क्रमांक 108

[227] अमरकांत से डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र की बातचीत : साक्षात्कार, अमरकांत वर्ष एक, संपादक – रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया एवम् नरेश सक्सेना, पृष्ठ क्रमांक 110

कहानियों में सामाजिक यथार्थ और वैयक्तिक यथार्थ की सीमा पर अमरकांत कहते हैं कि ''वैयक्तिक अनुभव या भोगे हुए यथार्थ के नाम पर साहित्य में बहुत–सी विसंगतियाँ आई हैं। इसके आधार पर नितान्त निजी यथार्थ का भी चित्रण लोगों ने किया है। वैयक्तिक यथार्थ में कभी–कभी निजी कुंठा, निजी संत्रास, घोर व्यक्तिवादिता के दर्शन होते हैं। वैयक्तिक यथार्थ के नाम पर, जो एक नारे की तरह है, बहुत–सी रचनाओं का खण्डन किया जाता है। रचना यथार्थ की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है, वह रचना हमारे अनुभव क्षेत्र के अंतर्गत भी आ सकती है और उससे बाहर भी जा सकती है। वस्तुपरकता ही श्रेष्ठ रचना की जान है। यदि सच्चाई एकदम निजी भी हो तो भी उसे रचनात्मक विशिष्टता उसी समय मिलती है जब वह पूरे समाज की सच्चाई या युग की सच्चाई के रूप में उभरकर आती है।''[228] कला और वस्तु के संतुलन के संदर्भ में अमरकांत का मत है–''संतुलन कोई गणित थोड़े ही है। एक रचनाकार के लिए दोनों ही आवश्यक हैं। अगर कहीं कला ही कला है, वस्तु नहीं है तो मान लिजिये जीवन ही नहीं है। कहीं अगर जीवन ही जीवन है, कला नहीं है तो वह पत्रकारिता हो जायेगी। लेखक अपने तरीके से दोनों का इस्तमाल करता है। लेखक का काम है जीवन को देखना और उससे बिम्ब प्राप्त करना। उसमें कला और वस्तु दोनों होता है। ''.....तराजू पर कला और वस्तु को संतुलित नहीं किया जा सकता। पर दोनों आवश्यक हैं। किसका कितना अनुपात है यह रचना के स्वरूप पर भी निर्भर करता है। साथ ही साथ यह 'एवर डेवलपिंग' चीज है। यह कोई स्थिर चीज नहीं है। यह बात लेखक की

[228] कुछ यादें कुछ बातें, संस्मरण, लेखक – अमरकांत, पृष्ठ क्रमांक 136 और 137

मेहनत व उसकी क्षमता पर भी आधारित है...।''[229]

अमरकांत अपने आप को कम्युनिस्ट नहीं मानते। वे विचारधाराओं से प्रभावित होने की बात तो स्वीकार करते हैं पर किसी 'वाद विशेष' की चार दिवारी में अपने आप को कैद करना पसंद नहीं करते। साहित्यकारों की अवसरवादिता से वे काफी दुखी होते हैं। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के समर्थक हैं अमरकांत। अपने ऊपर वे राजनीति का भी प्रभाव स्वीकार करते हैं। वे स्वयं राजनीति की राह पर चलकर फिर लेखक बने थे। अमरकांत मानते हैं कि विचारधाराओं से प्रभावित होना गलत नहीं है। पर यथार्थ की भावभूमि पर अगर वे विचारधाराएँ अपनी उपयोगिता साबित न कर पायें, समाज में प्रगति का कारण न बन सकें तो फिर उनसे चिपके रहना ठीक नहीं है। अमरकांत एक लेखक से पूरी ईमानदारी के साथ सृजन की आशा करते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अन्यायी शासन के आगे बिना घुटने टेके उसका सामना करने के अमरकांत हिमायती हैं। अवसरवादी होकर लेखनी से समझौता करने वालों के प्रति उनके मन में दुख है। किसी 'वाद' की चार दीवारी उन्हें स्वीकार नहीं है। हर वो विचारधारा जो समाज, जनता और देश के हित में है उसे स्वीकार करने में उन्हें परहेज नहीं है। अमरकांत का साहित्यिक दृष्टिकोण बड़ा ही व्यापक एवं उदार है।

बीमार पड़ने के बाद अमरकांत को कठोर प्रतिबंधों के दौर से गुजरना पड़ा। अब उनका घूमना फिरना कम हो गया किंतु आर्थिक दबाव और परिवार की जिम्मेदारियों से जूझते हुए भी उन्होंने लिखने का क्रम नहीं छोड़ा। उम्र के इस पड़ाव पर भी उनका लेखन कार्य सतत जारी है। नए लोगों को वे पढ़ रहे हैं। खुद अमरकांत के शब्दों में

[229] मई 2006 में अमरकांत से लिए साक्षात्कार के आधार पर

''पत्र–पत्रिकाओं के विषय में मैं इतना जरूर कहना चाहूंगा कि यदि उन्हें संगठित ढंग से निकाला जाएगा तो लोग पढ़ेंगे। उन्हें पाठकों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी भी निकालने वालों की है। इधर बीमारी के कारण मैं बहुत नए लेखकों और लेखिकाओं को पढ़ नहीं पाया हूँ, फिर भी, उदय प्रकाश, अखिलेश, मैत्रेयी, ममता कालिया, चित्रा मुद्गल ने अच्छी कहानियाँ और उपन्यास लिखे हैं।[230]

अमरकांत का संपूर्ण व्यक्तित्व जीवन के कठोर तपा से तपकर कंचन से कुंदन बनता चला गया। उन्होंने अपनी मूल्यनिष्ठा समाज संपृक्ति दायित्व चेतना और मानवीय संवेदना के आधार पर लेखकीय धर्म का निर्वाह किया है। अमरकांत का संपूर्ण साहित्य उनकी इसी समर्पित और संकल्पित मूल्य चेतना का प्रमाण है।

वर्ग–विभेद की परिकल्पना कार्ल मार्क्स की देन है। उन्होंने आर्थिक एवं राजनीतिक चिंतन के अन्तर्गत समाज को तीन वर्गों में बांटा और तीनो के अलग–अलग नाम दिये। पहला–कैपिटलिस्ट क्लास, दूसरा मिडिल क्लास तीसरा लोअर क्लास। मिडिल क्लास के लिए हिन्दी में मध्यवर्ग का प्रयोग होता है। सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य में इस शब्द का प्रयोग प्रगतिशील साहित्य से प्रारम्भ हुआ। समाज में वे समूह जिनमें आर्थिक स्तर पर भेद है वह सामान्यतः वर्ग कहलाता है या इसे इस प्रकार कह सकते हैं कि मनुष्य में ऐसे बडे समूह को जो उत्पादन के साधनों से, सामाजिक संगठन की दृष्टि से, भूमि की दृष्टि से तथा स्थान की दृष्टि से भिन्न–भिन्न होते हैं उसे वर्ग कहते हैं। समाज की इकाई ही वर्ग के रूप में परिभाषित की जाती है जिसमें एक ही स्तर के

---

[230] अमरकांत से चंद्रप्रकाश पाण्डेय से बातचीत : साक्षात्कार, वसुधा, जुलाई–सितंबर 2005, पृष्ठ क्रमांक 121

लोग आते हैं। यह स्तरता सामाजिक एवं आर्थिक रूप से है। सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के आधार पर ही किसी व्यक्ति का वर्ग निर्धारित होता है और आय, शैक्षणिक संस्कार, व्यवसाय व वंश–परंपरा से व्यक्ति की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का पता चलता है। इसी से उस वर्ग के व्यक्ति का व्यवहार, आचरण आदि का पता भी चलता है और उसकी सामाजिक और मानसिक विशेषता भी प्रकट होती है। समाज में स्थित सभी व्यक्तियों के गुण, व्यवहार, कार्य आदि में समानता नहीं होती। इसी विषमता के कारण ही वर्गों का निर्माण होता है। वर्ग को स्थाई रूप प्रदान करने के लिए सामाजिक असमानता को भी एक प्रमुख कारण के रूप में देखा गया है। यह सामाजिक असमानता धर्म, जाति, संस्कृति व वंश आदि से उत्पन्न होती है। मानव जीवन की विभिन्न समस्याएँ– रोजी–रोटी आदि लोगों के बीच भेद उत्पन्न कर देती है और यही भेद धीरे–धीरे वर्ग के रूप में परिवर्तित होने लगता है जिसमें स्वाभाविकता होती है। इसे विभिन्न वर्गों, जाति–प्रजाति तथा सेक्स के आधार पर भी स्वीकार किया गया है। यदि उत्पादन के साधनों पर समाज का सामूहिक नियंत्रण हो जाती तो समाज में वर्ग की उत्पत्ति नहीं होती। वर्ग को उत्पन्न करने में अर्थ व्यवस्था प्रमुख कारण रही है। विशिष्ट व्यक्तियों की विशेषताओं और उनकी सामाजिक एवं आर्थिक आधारों के अनुसार उनका विशिष्ट वर्ग बनता है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार– समाज की विभिन्न स्थितियों में वर्ग को उठाने का प्रयास करता है। यही वर्ग विभाजन का कारण भी बनता है। समाज और वर्ग में घनिष्ठ संबंध होता है। यह होना भी स्वाभाविक है क्योंकि मानव जीवन अनेक प्रकार की सामाजिक अंतःक्रियाओं तथा सामूहिक संदर्भों से जुड़ा है। अपने जीवन के मध्य ही वह सामाजिक समूहों से संबंध

जोड़ता है, जिसमें कुछ सामयिक होते हैं और कुछ तत्कालिक। सामाजिक समूहों में आर्थिक आधारों के वर्ग, समाज, व्यक्तियों के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। समाज में विद्यमान ये समूह एक प्रकार की सामाजिक प्रतिष्ठा की और उन्मुख होते हैं। एक वर्ग में सामान्यतः बराबर की सामाजिक प्रतिष्ठा, समान पद और आर्थिक क्षमता के लोग होते हैं और उनके निजी जीवन–दर्शन व रहन–सहन अन्य कई कार्यों में अधिकतर समानता दृष्टिगोचर होती है। सामंती समाज में उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग दो ही वर्ग थे लेकिन जैसे ही सामंती व्यस्था के स्थान पर पूँजीवादी व्यवस्था ने ले लिया तभी एक तीसरे वर्ग का निर्माण सामान्य रूप से हुआ। इस प्रकार पूँजीवादी समाज में उच्च, मध्य और निम्न ये तीन वर्ग हुए।

मध्यवर्ग को मैक्स वेबर ने सामाजिक वर्ग से अभिहित करते हुए कहा है–एक वर्ग संपत्तिवान है दूसरा संपत्तिहीन होता है और तीसरे सामाजिक वर्ग में अपने सामर्थ्य से किसी भी वर्ग में सम्मिलित होने की स्वतंत्रता होती है, यही मध्य वर्ग है। 'दास कैपिटल' में कार्ल मार्क्स ने समाज को शोषक वर्ग, शाषित वर्ग तथा मध्यवर्ग तीन वर्गों में बाँटा है। वर्ग संघर्ष को ध्यान में रखते हुए उन्होंने यह विभाजन किया था।

इसके आधार पर वर्ग का विवेचन इस प्रकार है–

**उच्च वर्ग :–**

जरूरत से ज्यादा संपत्ति इस वर्ग के पास होता है जिससे उसे पद भी ऊँचा और सामाजिक प्रतिष्ठा भी अधिक ही प्राप्त होती है। उच्च वर्ग के पास संपत्ति अधिक होने का कारण है–भू संपत्ति का अधिक होना, उद्योग–धंधे का स्वामित्व होना और उच्च पदों पर स्थित होना है। साथ ही विरासत से प्राप्त संपत्ति या पैतृक के उत्तराधिकारी

से भी ये वर्ग उच्च वर्ग के सदस्य बन जाते हैं। समाज के पाँच प्रतिशत लोग इस वर्ग के अंतर्गत आते हैं। यह समाज का सबसे छोटा वर्ग है। इस वर्ग के अंतर्गत–पूँजीपति, बड़े–बड़े व्यवसायी व भूमिपति आदि आते हैं। आर्थिक समृद्धि होने कारण वैभवशाली जीवन व्यतीत करता है। अतः समाज में इनका वर्चस्व कायम रहता है। इसलिए बुनियादी परिवर्तन व क्रांतिकारी दर्शनों के विचारों का विरोध करते हुए दिखाई पड़ते हैं। निम्नवर्ग के प्रति सहानुभूति रखते हैं। व्यवसाय में दैहिक श्रम नहीं करते हैं।

कथा–साहित्य में मध्यवर्ग का जो रूप था, वह उत्तर औपनिवेशिक काल में नहीं था। उत्तर औपनिवेशिक काल में मध्यवर्ग का विकास एक 'आर्थिक श्रेणी' के तौर पर देखने को मिलता है वहीं आधुनिक कथा–साहित्य में वह अधिक जटिल और संश्लिष्ट रूप में चित्रित होता है। मध्यवर्ग का जीवन बनावटीपन, खोखलापन, मोह, भ्रम और तनाव से भरा हुआ है। इनके जीवन की जटिलताओं, उलझनों, अंतर्विरोधों आदि को चित्रित करना अत्यन्त कठिन है। वर्तमान समय में मध्यवर्ग का अत्यधिक विस्तार हो रहा है और साथ ही मध्यवर्ग के चरित्र में लगातार परिवर्तन देखा जा रहा है। अतः मध्यवर्ग के चरित्र व बदलते परिवेश पर पुनः सूक्ष्मता व गंभीरता से विचार–विमर्श आवश्यक है।

निम्नवर्ग के संबंध में 'हिंदी साहित्य कोश' में लिखा है–यह समाज का वह भाग है जो अपनी जीविका का उपार्जन श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का ही शोषण किया जाता है। इस वर्ग के अंतर्गत किसान और मजदूर आते हैं। इस वर्ग को 'सर्वहारा' की संज्ञा से भी अभिहित किया गया है। वह मजदूर या वह श्रमिक जिनका न तो उत्पादन के साधनों पर कोई अधिकार है न उत्पाद्य वस्तु पर। वास्तव में यह अपना श्रम बेचकर श्रम के प्रतिफल से अपना कोई संबंध नहीं रखता, इसलिए यह पूरे

अर्थों में सर्वहारा है। प्रमुख रूप से अनिश्चित तथा निश्चित दैनिक मजदूरी अथवा जीविका पर निर्भर रहने वाला मानव समूह निम्नवर्ग है। इस प्रकार पूँजीवादी व्यवस्था में निम्नवर्ग या तो शोषित वर्ग या फिर सर्वहारा के रूप में प्रतिष्ठित है जो उत्पादक है और उत्पादन करने में सारा जीवन व्यतीत कर देता है। उसके द्वारा उत्पादन क्रिया पर ही उच्च और मध्य वर्ग निर्भर है। इस आधार पर निम्न वर्ग की अवधारणा इस प्रकार निर्मित की जा सकती है–वर्गीय संघर्ष में ऐसे वर्ग, जो किसी भी दृष्टि में स्वयं के मनोभावों को उद्भूत न कर पाने से उच्च और मध्य वर्ग की क्षमताओं से वंचित है। यह निम्न वर्ग उन लोगों का है जो अपने जीविकोपार्जन के लिए श्रम पर निर्भर रहते हैं। जीविकोपार्जन के लिए श्रम पर निर्भर रहने के कारण इस वर्ग को पीड़ित सर्वहारा के नाम से भी इंगित किया जाता रहा है।

हिन्दी कथा–साहित्य में मध्यवर्ग को स्वतंत्र और व्यापक पहचान प्रेमचन्द से मिली और इसी परंपरा का पालन नयी कहानी के समय अमरकान्त ने की। स्वतंत्रता के बाद मध्यवर्गीय समाज को आधुनिकतावाद और फैशन के चकाचौंध ने जिस तरह आकर्षित किया है उससे एक विचित्र सामाजिक स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इसका कारण स्वयं मध्यवर्ग की जटिल संरचना है। जिसके कारण इसकी व्याख्या तो सम्भव है, लेकिन परिभाषा देना सम्भव नहीं। इसके अंतर्गत विरोधों, उलझनों और अन्य बारीकियों को समग्रता से चित्रित करना कठिन है। इसका कारण मध्यवर्ग का लगातार बदलता चरित्र और स्वरूप भी है। मध्यवर्ग समाज का एक वर्ग है, जिनकी अभिव्यक्ति हर देशकाल में, साहित्य में किसी न किसी रूप में हर समय होती रही है। कथाकार अमरकान्त ने मध्यवर्गीय समाज के आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक हर

पहलुओं को अपने कथा–साहित्य में चित्रित किया है, यही कारण है कि कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय समाज के घुटन से भरे, तड़पते, सिसकते, स्त्री–पुरुष के बीच टकराहट और जीवन की जटिलता पूरी मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त किया है।

नयी कहानी के रचनाकारों में अमरकान्त की कथा–साहित्य अपना एक अलग एवं महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अमरकान्त जी के अब तक तेरह उपन्यास और पन्द्रह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। हिन्दी के प्रायः सभी विद्वानों ने इनके कथा–साहित्य के महत्व तथा उसकी सार्थकता को स्वीकार किया है। उनकी कहानियों पर फिल्में भी बनी है व रंगमंच पर नाटय प्रदर्शन भी होता रहा है। भारत सरकार और राज्य सरकार ने समय–समय पर उनकी रचनाओं को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया है। अतः ''अमरकान्त के कथा–साहित्य में सामाजिक वर्गीय विषमताओं का अध्ययन'' शीर्षक प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए आधार बनाया गया है। अमरकान्त ने निम्न मध्यवर्ग को अपनी कथा–साहित्य का मुख्य विषय बनाकर उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। वह स्वयं मध्यवर्ग से संबंध रखते थे और इस जीवन को उन्होंने करीब से जाना–पहचाना और भोगा था। अपनी कथा–साहित्य के माध्यम से उन्होंने मध्यवर्गीय समाज और व्यवस्था की तस्वीर प्रस्तुत की है। उन्होंने अपनी कहानी अधिकांशतः छोटे नगर, कस्बे या गाँव से उठाकर हमारी आँखों से मध्यवर्गीय जीवन के विविध पहलुओं दैनिक दिनचर्या के जाने कितने परदे उठाए हैं। अमरकान्त के कथा–साहित्य मध्यवर्गीय जीवन की खरी और साफ तस्वीर पेश करती है। उन्होंने एक ओर आर्थिक संकटों से लगातार जूझते, भूख, गरीबी, अभाव, बेरोजगारी, पीडाओं और उससे प्रभावित संवेदनाओं और उससे उत्पन्न विसंगतियों का चित्रण किया है तो दूसरी ओर स्वतंत्रता के बाद मूल्यों के विघटन, मोहभंग एवं जीवन–यापन के लिए संघर्ष की भी बात की है। साथ

ही निम्न मध्यवर्ग की जीवन, रीतियों, स्वभाव–संस्कारों, विचारों, पद्धतियों, मानसिक कुण्ठाओं, नैतिक वर्जनाओं, प्रदर्शनप्रियता, ढोंग तथा बेहतरी की आशा और महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु उसकी व्यस्तता और दौड–धूप का और परिणाम में व्यर्थता, अविश्वास का सजीव चित्रण किया है। अमरकान्त के कथा–साहित्य निम्न मध्यवर्ग के संस्कारों तथा उसके साथ जो पिछडापन अंधविश्वास, पाखण्डता, रूढियों को उजागर करने के साथ–साथ मध्यवर्गीय व्यक्ति कितना, कायर, लापरवाह, कमीना और धूर्त होता है। इसका वास्तविकता विश्लेषण करते हैं। अमरकान्त हर प्रकार के सामाजिक विसंगतियों और अंर्तविरोधों की सटीक चित्रण करने के साथ–साथ समाज रचना, साझेदारी की बात भी करते दिखाई देते हैं। इस दृष्टि से भी अमरकान्त की रचना विशिष्ट है। अमरकान्त के पास आर्थिक अभावों, टूटकर एवं मानसिक तनाव से ग्रस्त होकर आत्मविश्वास खोकर हताश होते पात्रों का चित्रण किया है। इस प्रकार अमरकान्त की रचनाओं में मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग की जितनी व्यापक जानकारियाँ दी गई है शायद ही किसी अन्य कहानीकार के पास वैसी जानकारियाँ हों। अमरकान्त का कथा–साहित्य काफी व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण हैं। यह उनकी सबसे बडी उपलब्धि हैं।

अमरकान्त के कथा–साहित्य मध्यवर्गीय जीवन की हर पहलू को समझने की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। कथाकार अमरकान्त किस प्रकार इस वर्ग के जीवनशैली की वास्तविकता को अपने कथा साहित्य में व्यक्त करते हैं, इन सभी को विश्लेषित करना प्रस्तुत शोद्य–प्रबंद्य का लक्ष्य है। प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक वर्गीय विषमताओं तथा मध्यवर्गीय जीवन यथार्थ की दृष्टि से अमरकान्त के कथा–साहित्य का मूल्यांकन तो किया गया है साथ ही उनके कथा–साहित्य का वैशिष्ट्य एवं अति व्यंजना पक्ष को भी निरूपित किया है।